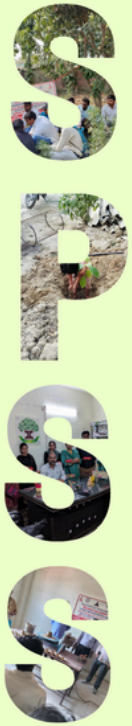

SARDAR PATEL SHIKSHAN SANSTHAN

अन्धकारात् प्रकाशाय संस्कारैः समृद्धये।

SARDAR PATEL SHIKSHAN SANSTHAN (SPSS) - RURALGRO

अन्धकारात् प्रकाशाय, संस्कारैः समृद्धये।

From darkness to light, to enlightenment by rituals.

"भोजन को अपनी औषधि बनाओ, कौशल को अपनी शक्ति बनाओ।"

हमारा दृष्टिकोण

कौशल विकास के माध्यम से ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाना और शिक्षा, खाद्य, कृषि, शिल्प एवं स्वास्थ्य में भारत की समृद्ध पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को पुनर्जीवित करना जो आज के इस आधुनिक युग में धूमिल होती जा रही है, टिकाऊ, स्वस्थ एवं समृद्ध आजीविका का सृजनकरना ।

हमारे बारे में

सरदार पटेल शिक्षण संस्थान, ग्राम कसेरुआ कला (आजाद नगर), तहसील फूलपुर, प्रयागराज में स्थित एक पंजीकृत सामाजिक संस्था है, जो वर्ष 1988 से संपूर्ण उत्तर प्रदेश में शिक्षा, सामाजिक सेवा एवं समग्र विकास के क्षेत्रों में सक्रिय है। संस्था का पंजीकरण सोसाइटी रजिस्ट्रेशन अधिनियम 1860 की धारा 21 के अंतर्गत हुआ है तथा यह 12A, 80G, CSR-1, एवं नीति आयोग (NGO Darpan) UID: UP/2018/0186416 द्वारा मान्यता प्राप्त है।

संस्थान का प्रमुख उद्देश्य समाज के सभी वर्गों, विशेषकर वंचित और ग्रामीण समुदायों, के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, महिला सशक्तिकरण, तकनीकी प्रशिक्षण, प्राकृतिक चिकित्सा, कृषि विकास,भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण और आपदा राहत जैसे क्षेत्रों में स्थायी और समर्पित कार्य करना है।

संस्था द्वारा संचालित प्रमुख कार्यक्षेत्र:

- गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक से उच्च शिक्षा की स्थापना एवं विस्तार
- शारीरिक, बौद्धिक एवं नैतिक विकास हेतु प्रशिक्षण, पुस्तकालय, छात्रावास व खेलकूद सुविधाएं
- महिला सशक्तिकरण व कौशल विकास हेतु तकनीकी, हस्तशिल्प, हर्बल उत्पाद, खाद्य प्रसंस्करण, योग व प्राकृतिक चिकित्सा प्रशिक्षण

“Let food be your medicine, let skills be your power.”

Our Vision

Empowering rural communities through skill development and reviving India's rich traditional knowledge systems in education, food, agriculture, crafts and health that are losing ground in today's modern era, creating sustainable, healthy and prosperous livelihoods.

About Us

Sardar Patel Shikshan Sansthan, located at Village Kaserua Kala (Azad Nagar), Tehsil Phulpur, Prayagraj is a registered social organization, active in the fields of education, social service and overall development in entire Uttar Pradesh since the year 1988.The organization is registered under Section 21 of the Societies Registration Act 1860 and is recognized by 12A, 80G, CSR-1, and NITI Aayog (NGO Darpan) UID: UP/2018/0186416. We work in areas like education, health, environment, women empowerment, technical training, naturopathy, agricultural development, preservation of Indian culture, disaster relief for all sections of society with special focus on underprivileged and rural areas.

The main areas of work handled by the organization are:

- Establishment and expansion of quality primary to higher education
- Training for physical, intellectual and moral development, library, hostel and sports facilities
- Technology, handicrafts, herbal products, food processing, yoga and naturopathy training for women empowerment and skill development

- कृषि, डेयरी, मत्स्य पालन, जैविक खेती एवं वानिकी के माध्यम से आत्मनिर्भर ग्रामीण विकास
- स्वास्थ्य जागरूकता: एड्स, टीबी, कुपोषण, पोलियो, टीकाकरण आदि पर जन जागरण
- पर्यावरण संरक्षण: पौधरोपण, ग्रीनहाउस, शोध, जागरूकता कार्यक्रम
- आपदा राहत, मानवाधिकार संरक्षण, सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण व राष्ट्रीय एकता का सुदृढ़ीकरण
- संस्था को विभिन्न राज्य, केंद्र व अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों से सहयोग प्राप्त होता है और यह समय-समय पर सरकारी योजनाओं, CSR परियोजनाओं एवं सामाजिक सहभागिता के माध्यम से जनहित में कार्य करती है।

हमारा विश्वास:
हम समाज के प्रत्येक व्यक्ति में स्वाभिमान, समानता, शिक्षा और आत्मनिर्भरता का विकास करके एक सशक्त, शिक्षित और समृद्ध भारत के निर्माण के लिए कार्यरत हैं।

साझे कदम, साझा विकास

✅ कर में छूट का लाभ
हमारी संस्था को 12A पंजीकरण प्राप्त है, जिससे हमारे साथ किए गए हर धर्मार्थ सहयोग का उपयोग पूरी पारदर्शिता से किया जाता है और संस्था की आय पर आयकर नहीं लगता। यह हमें वित्तीय स्थिरता और दीर्घकालीन सामाजिक सेवा के लिए सक्षम बनाता है।

✅ दानदाताओं को टैक्स में कटौती
हमारे पास 80G पंजीकरण भी है, जिसके तहत कोई भी व्यक्ति या संस्था हमारे यहां दान करके आयकर में कटौती प्राप्त कर सकता है।
👉 इससे न सिर्फ समाज सेवा होती है, बल्कि दानदाता को भी प्रत्यक्ष वित्तीय लाभ मिलता है।

✅ कॉर्पोरेट फंडिंग हेतु पात्रता
संस्था को CSR-1 पंजीकरण प्राप्त है, जो हमें कॉर्पोरेट कंपनियों से CSR फंड प्राप्त करने के योग्य बनाता है।
👉 इससे बड़ी कंपनियां भी अपने CSR बजट का एक हिस्सा हमारे समाजहित कार्यों में लगाकर अपनी कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी निभा सकती हैं।

📌 संस्था के कार्यों का सामाजिक जीवन पर प्रभाव
- शिक्षा के द्वारा सशक्तिकरण
- महिला सशक्तिकरण
- बाल कल्याण
- युवाओं में कौशल विकास
- पर्यावरण संरक्षण और संवहनीय ग्रामीण विकास
- ग्रामीण स्वावलंबन और आधारभूत विकास
- आपदा राहत एवं स्वास्थ्य जागरूकता
- सांस्कृतिक व नैतिक पुनर्जागरण
- समावेशिता और समग्र समाज कल्याण

- Self-reliant rural development through agriculture, dairy, fisheries, organic farming and forestry
- Health awareness: Public awareness on AIDS, TB, malnutrition, polio, vaccination etc.
- Environmental protection: Plantation, greenhouse, research, awareness programmes
- Disaster relief, protection of human rights, preservation of cultural heritage and strengthening of national unity
- The organization receives support from various state, central and international agencies and from time to time works in the public interest through government schemes, CSR projects and social participation.

Our Belief:

We are working towards building a strong, prosperous and rich India by developing self-esteem, disability, education and self-reliance in every individual of the society.

Shared steps, shared development

✅Tax exemption benefits
Due to our organization's 12A registration, all charitable contributions are handled in full transparency and the organization's earnings are exempt from income tax. This makes it possible for us to provide long-term social services and financial stability.
✅ Donor tax deduction
Additionally, we have an 80G registration, which allows any individual or group to donate to us and receive an income tax deduction.
👉 This benefits the contributor directly financially in addition to helping society.
✅ Qualifications for Corporate Finance
Due to the organization's CSR-1 certification, corporate companies are able to provide us with CSR funding.
👉 With this, even large corporations can contribute a portion of their CSR budget in our humanitarian work, fulfilling their corporate social duty.

- **📌 How the organization's activities affect social lives**
- Empowerment via education
- Empowerment of women
- Welfare of children
- Youth skill development
- Sustainable rural development and environmental preservation
- Infrastructure development and self-reliance in rural areas
- Health awareness and disaster relief
- Renewal of culture and ethics
- Social wellbeing in general and inclusivity

संस्था की प्रासंगिकता – बदलते समय में स्थायी समाधान

1. कृषि: जीवन का आधार

आज... हम जो खाना खाते है, उसका ज्यादातर हिस्सा प्रसंस्कृत होता है, उसमें पोषक तत्व कम तथा हानिकारक तत्व अधिक हैं। जो कि पारंपरिक ज्ञान से वंचित होता है। इसमें रसायनों का प्रयोग अधिक होता है, ये रसायन न केवल स्वास्थ अपितु प्रकृति को भी हानि पहुंचाते हैं। हमारे पूर्वजों ने बिना किसी रसायन या योगज के प्रयोग के पोषक तत्वों से भरपूर, मौसमी और स्थानीय रूप से प्राप्त, खाद्य प्रणालियों की खेती की|

अब समय आ गया है कि खाद्य संप्रभुता को पुनः प्राप्त किया जाए और ग्रामीण युवाओं को उस ज्ञान से प्रशिक्षित किया जाए जिसने सदियों से भारत को पोषित किया है।

2. वैदिक शिक्षा

प्राचीन काल में मौखिक शिक्षा पद्धति होती थी, जिसमे गुरु शिष्यों को अपने समीप बैठा कर शिक्षा देते थे, छात्रों की जिससे सीखने की, याद करने की क्षमता बढ़ती थी वह चीजों को व्यवस्थित तरीको से याद करने में सक्षम थे। उन्हें अध्यात्म, विज्ञान, दर्शन शास्त्र, , युद्ध कला, चिकित्सा आदि हर प्रकार के विषयों की शिक्षा दी जाती थी। यही शिक्षा पद्धति गुरुकुल शिक्षा प्रणाली कही जाती थी, इस शिक्षा प्रणाली में छात्रो को प्रकृति से जोड़कर रखा जाता था जिसमे वह सभी दैनिक कार्य स्वंय करते थे जिसमें कृषि आदि भी शामिल होते थे।. गुरु उन्हें अनुशासित जीवन जीना सीखाते थे । हमारी भारतीय शिक्षा प्रणाली न केवल ज्ञान कौशल, प्रकृति आदि, हर प्रकार से हर क्षेत्र में समृद्ध की।

“ज्ञान मनुजस्य तृतीय नेत्रम”

हमारे पूर्वजों द्वारा पारंपरिक शिक्षा से-

(i) ज्ञान का विकास
(ii) स्वास्थ संरक्षण एवं संवर्धन
(iii) जीविकोपार्जन एवं कला, कौशल का विकास
(iv) आध्यात्मिक उन्नति
(v) नैतिक एवं चारित्रिक विकास
(vi) संस्कृति का संरक्षण एंव विकास आदि ।

Organizational relevance: Long-lasting solutions in evolving times

1. Agriculture: essential to life

The majority of the food we consume today is processed, contains fewer nutrients, and contains more dangerous ingredients. There is no conventional knowledge in it. It makes extensive use of chemicals, which are bad for both the environment and human health.Without using chemicals or additives, our predecessors produced nutrient-dense, locally sourced, and seasonal food systems. It's time to restore food sovereignty and impart to young people in rural areas the knowledge that has sustained India for generations.

2. Vedic education

The Guru used to instruct the followers by having them sit close to him in an oral instruction technique from antiquity. The pupils' capacity to absorb and retain information improved, and they were able to do it in a methodical way. They were taught all kinds of subjects like spirituality, science, philosophy, science, art of war, medicine etc. This education system is called Gurukul education system. Students in this educational system were encouraged to stay in touch with nature by performing all everyday tasks, including farming, etc. They used to learn how to live a disciplined life from their guru.Every facet of our Indian educational system is abundant, including knowledge, skills, nature, and more.

“Knowledge is the third eye of human”

Through the conventional instruction provided by our forefathers—

(i) Knowledge development
(ii) Health promotion and protection
(iii) Making a living and honing artistic and technical abilities
(iv) Spiritual growth
(v) Character and moral growth
(vi) Cultural development and preservation, etc.

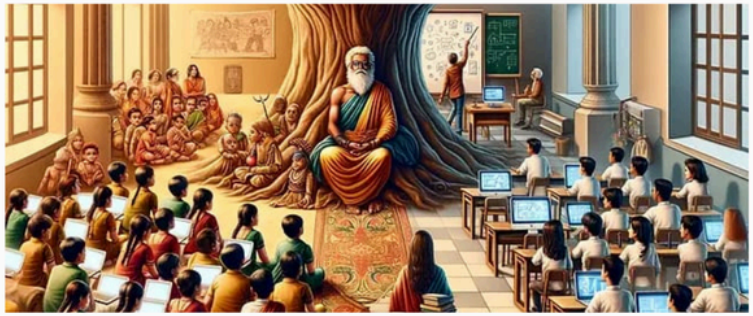

आधुनिक काल

आधुनिकता की चकाचौंध में आज की पीढी अपने मौलिक नैतिक व सामाजिक आदि कर्तव्यों का निर्वाह करना भूल चुकी है, अनुशासन विहीन हो चुकी है। अपनी पारंपरिक जीवनशैली, ज्ञान एवं संस्कृति को भुलकर आधुनिकरण, डिजिटल व्यसन जैसी चीजों में लिप्त होकर मानसिक. समाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन को न केवल प्रभावित कर रही है अपितु प्रकृति का विनाश व शोषण भी कर रही है, अपराधिक प्रवृत्ति की ओर अग्रसित हो रही हैं।

उपाय

"आधुनिकता से अध्यात्म"

आधुनिक होने का तात्पर्य, अपने संस्कृति, परंपरा आदि को भूलना नहीं है, उसे उन्नति की ओर ले जाना है। वर्तमान समय में विज्ञान और तकनीक से अलग होना असम्भव है ,आधुनिक शिक्षा में विज्ञान और तकनीक एक उन्नति शील क्षेत्र है अत: इसके बिना विकास संभव नहीं है हमें आधुनिक एवं प्राचीन शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए |

अत: अध्यात्म की तरफ बढ़ने के लिए और हमारी परम्परागत ज्ञान पद्धतियों को पुनर्जीवित करने के लिए प्राचीन और पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों को मिश्रित शिक्षा देना उचित उपाय प्रतीत होता है

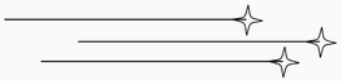

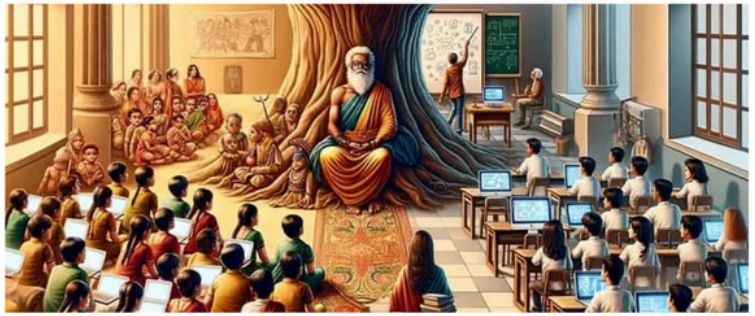

The Modern Era

The current generation lacks discipline and has forgotten its basic social and moral responsibilities in the context of modernity.In addition to negatively impacting our mental, social, moral, and spiritual well-being, we are also damaging and exploiting nature and encouraging criminal inclinations by eroding our traditional way of life, knowledge, and culture and becoming engrossed in things like modernity and digital addiction.

Sollution

"Spirituality from Modernity"

Being modern does not imply ignoring your traditions, culture, etc.; rather, it means advancing them. It is impossible to separate science and technology in the modern day. In contemporary education, science and technology are advancing subjects. Development is therefore impossible without it. We ought to concentrate on both ancient and modern education.

Therefore, teaching a combination of ancient and traditional education systems appears to be the best way to promote spirituality and revitalize our traditional knowledge systems.

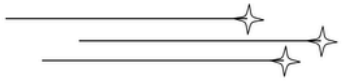

हमारे फोकस क्षेत्र

* पारंपरिक खाद्य एवं कृषि

- जैविक एवं शून्य बजट खेती: रासायनिक इनपुटके बिना प्राकृतिक तरीकों को पुनर्जीवित करना ।
- देसी बीजो का पुनरुद्धार : किसानों को विरासत की किस्मों को बचाने, बदलने और बोने का प्रशिक्षण देना
- बाजरा एवं स्वदेशी अनाज प्रसंस्करण : युवाओं को प्राचीन अनाज (रागी, ज्वार, बाजरा) उगाना और उनका विपणन करना सिखाना
- घरेलू पोषण उद्यान : स्थानीय सब्जियों जड़ी-बूटियों और फलों के साथ खाली स्थानो पर क बगीचों को बढ़ावा देना
- देशी गाय आधरित खेती : A2 दूध (बीटा-कैसिइन प्रोटीन), गोबर गैस और पंचगव्य प्रथाओं को बढ़ावा देना

* प्राचीन शिक्षा पद्धति एवं कौशल

- गुरुकुलों का पुनर्निर्माण : बच्चों में अनुशासन नैतिक व चरित्रिक विकास करना, उन्हें उनके कौशलों को बढ़ावा देना तथा नए कौशल सिखाना.
- प्रौद्योगिकी गुलामी से मुक्ति : वर्तमान में सब तकनीको के डिजिटल व्यसन के आदि है और इनके बिना जीवन की कल्पना से परे है
- आत्मनिर्भरता : आधुनिक पीढ़ी मानसिक, सामाजिक व अपने आध्यात्मिक जीवन को नष्ट कर रही है, संशय में चिंतनशील है अपने भविष्य के लिए, कौशल और ज्ञान से उन्हे जीवन सिखाना
- संस्कृति का संरक्षण : आधुनिकता में खोकर अपनी जड़ों को कमजोर कर रहे है, अपनी भारतीय समृद्ध संस्कृति को परम्पराओ को पुनर्जीवित करना ।

* भोजन औषधि के रूप में

- पारंपरिक खाद्य ज्ञान : सात्विक आहार, किण्वित खाद्य पदार्थ और मौसमी खाने पर कार्यशालाएँ
- स्थानीय सुपरफूड : रोजमर्रा के भोजन के हिस्से के रूप में मोरिंगा, आवला, हल्दी और गुड़ जैसे खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देना
- आयुर्वेदिक खाना पकाने की प्रथाएं : मसालों के संयोजनो का उपयोग जो उपचार करते हैं।

* ग्रामीण खाद्य उद्यम

- बाजरा स्नैक इकाइयों
- अचार और पापड सहकारी समितियाँ
- हर्बल चाय और मसाला मिश्रण स्टार्टअप
- देसी घी, गुड़ और पारंपरिक तेल दिखाने वाली इकाइयों

Our Focus Areas

* Traditional Food and Agriculture

- Reviving natural ways without the use of chemicals is the goal of organic and low-budget farming.
- Reviving native seeds: teaching farmers how to preserve, alter, and plant heritage cultivars
- Teaching young people to cultivate and sell traditional grains (Ragi, Jowar, and Bajra) through millet and indigenous grain processing
- Encouragement of backyard gardens with regional fruits, vegetables, and herbs is known as "Home Nutrition Gardens."
- Desi Promoting A2 milk, Gobar Gas, and Panchagavya techniques in cow-based rarming

* Ancient Education System and Skills

- The goal of rebuilding Gurukuls is to help kids learn new skills, improve their morals, discipline, and character.
- Freedom from technology slavery: Everyone is currently dependent on technology, and it would be impossible to imagine living without it.
- Self-reliance: Teach the current generation life skills and knowledge, as they are ruining their mental, social, and spiritual lives and are unsure and reflective about their future.
- Preservation of Culture: We must restore our rich Indian culture and customs because we are losing touch with our heritage by becoming enmeshed in modernity.

* Food As Medicine

- Workshops on fermented foods, seasonal eating, and sattvic diets are examples of traditional food wisdom.
- Local superfoods: encouraging the inclusion of items like jaggery, turmeric, amla, and moringa in regular meals
- Ayurvedic cooking methods: Making use of healing spices and mixtures.

* Rural Food Businesses

- Millet snack units
- Pickle and papad cooperatives
- Herbal tea and spice blending startups
- Desi ghee, quality jaggery and traditional oil display units

अन्य कौशल क्षेत्र

- हथकरघा बुनाई कढ़ाई, मिट्टी के बर्तन
- बांस शिल्प, मिट्टी के घर बनाना
- आयुर्वेद और हर्बल दवा
- परंपरा की तकनीक के साथ जोडने वाले युवा कौशल केन्द्र

हमारा मॉडल

- समुदाय के नेतृत्व वाले प्रशिक्षण, कार्यक्रम
- कौशल + उद्यम + बाजार
- कार्यशालाएँ + टूलकिट + मेंटरशिप
- स्कूल और एसएचजी साझेदारी
- मूल्यवर्धित खाद्य और शिल्प स्टार्टअप

हम जिस समस्या से निपट रहे हैं.

❌ कम पोषण वाला प्रसंस्कृत (रसायन युक्त) भोजन
❌ कौशल के अभाव में युवाओं का पलायन उनमे जीवन को लेकर निराशा
❌ स्वदेशी बीजों और खाद्य प्रथाओं में गिरावट
❌ रसायनों से प्रकृति को हानि
❌ पारंपरिक शिक्षा, संस्कृति धूमिल हो रही है।
❌ अनुशासनहीनता, संस्कारहीनता तथा चरित्रहीनता युक्त पीढ़ी

✓ हम विरासत कौशल, ज्ञान और स्थानीय उद्यमिता के माध्यम से वास्तविक विकल्प प्रदान करते हैं

स्थानीयता से वैश्विकता की उड़ान

परिचय : कला से कर्म तक (हमारे स्कील प्रयोगशाला)

1. बढ़ई कार्य - विशिष्टता और नवीनता : न केवल पारंपरिक फर्नीचर का निर्माण अपितु ऐसे विशेष उत्पाद जो बाजारों मे उपलब्ध नहीं है। लकड़ी से बने स्थानीय डिज़ाइन वाले उत्पाद जो ग्राहकों को संस्कृति और आधुनिकता का एहसास कराते हैं।

2. रसोई - दवा और स्वास्थ्य साथ: हमारा संस्थान रसोई उत्पाद की एक ऐसी "हर्बल और औषधीय" श्रृंखला बनाता है जो स्वाद और स्वास्थय दोनों का ख्याल सखता है।

3. मिट्टी - प्रकृति के रंगों से पारंपरिक आकार : मिट्टी द्वारा बने हस्तशिल्प उत्पादों को प्राकृतिक हर्बल रंगों से सजाया जाता है - कोई रसायन नहीं, हानि नहीं । इन रंगों का निर्माण न केवल हमारे संस्थान द्वारा होता है अपितु ये कौशल सिखाया भी जाता है।

4. मुंज- परंपरा से रोजगार : संस्था द्वारा प्रशिक्षित लोग मुंज से आकर्षक आभूषण, रसोई के बर्तन, बैग, मैट आदि जैसे अनेक उत्पाद बनाते हैं।
प्रशिक्षण + डिज़ाइन + रोजगार = आत्मनिर्भरता ।

Other Areas of Expertise

- Pottery, needlework, and handloom weaving
- Ayurveda, herbal medicine
- Mud houses, and bamboo crafts
- Youth skill centers that blend technology and tradition

Our Model

- Community-based programs and trainings
- Markets + Enterprise + Skills
- Mentoring + Toolkits + Workshops
- Partnerships between schools and SHGs
- Startups that add value to food and crafts

That's the Issue We're Facing.

❌ Processed (chemical laden) food with low nutrition
❌ Youth migration and hopelessness are caused by a lack of skills.
❌ Reduced use of native seeds and eating habits
❌ Environmental damage brought on by chemicals
❌ Traditional education and culture are fading away.
❌ A generation that lacks discipline, culture, and moral integrity

✓ We provide genuine alternatives by utilizing local entrepreneurship, heritage skills, and knowledge.

Globalism As An Escape From Localism

Introduction: Our Skills Lab: From Art to Action
Carpentry: Innovation and Uniqueness: Produces distinctive items that aren't seen in stores in addition to conventional furniture. Wooden goods with a local design that give consumers a sense of modernity and culture.
2.Kitchen: Health & Claim Together: Our institute produces a line of culinary goods called "Herbal & Medicinal" that considers both flavor and health.

3. Clay :Traditional shapes with natural colors : Handicrafts produced from clay are adorned with natural herbal colors that are safe and free of chemicals. Our institute not only manufactures these colors but also teaches the technique. .

4. Moonj-Traditional Employment: The institute trains individuals to produce a range of goods from Moonj, including bags, mats, kitchenware, and beautiful jewelry.
Design + Employment + Training = Self-Sufficiency.

🔷 हमारे प्रमुख कार्यक्रम एवं सहभागिता

- 🛠️VSSY – विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना:उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित "विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना (VSSY)" हमारे पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों के आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता की दिशा में उठाया गया एक कदम में हैं। हमारी संस्था ने इस योजना के माध्यम से ग्रामीण रोजगार और स्वावलंबन को बढ़ावा देते हुए समाज के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

- ⭐ODOP - एक जनपद एक उत्पाद : उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा एक विशेष पहल जिसका उद्देश्य हर जिले की एक विशिष्ट और पारंपरिक उत्पाद को प्रोत्साहित करना और उसका राष्ट्रीय - विदेशी बाजारों मे प्रचार-प्रसार । हमने स्थानीय कारीगरों और महिला स्वयं सहायता, समूहों को प्रशिक्षित किया और, खलीलाबाद (पीतल के बर्तन) देवरिया (सजावटी समान), प्रयागराज (मूँज हस्तशिल्प) जैसे अनेको उत्तर प्रदेश जनपदों में स्थायी आजीविका और विपणन सहायता प्रदान और प्रदर्शन तथा प्रयागराज के विशेष उत्पादों की ब्रडिग की है|

माघ मेला: भारत की अमूल्य विरासत
भारत एक ऐसा देश है जहाँ आध्यात्मिकता, परंपरा और प्रकृति का संगम होता है। यहाँ मेले सिर्फ़ व्यापार या मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि आस्था, विश्वास और संस्कृति के लिए होते हैं। माघ मेला भी एक ऐसा आयोजन है जो भारत की सदियों पुरानी परंपरा और आध्यात्मिक जीवनशैली का प्रतिबिंब है।
माघ मेला क्या है?
"माघ मेला" हर साल पौष पूर्णिमा से माघ पूर्णिमा (जनवरी-फरवरी) तक आयोजित होने वाला एक आध्यात्मिक और धार्मिक मेला है। यह विशेष रूप से प्रयागराज (पूर्व में इलाहाबाद) में आयोजित किया जाता है जहाँ गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों का संगम होता है। यह मेला शास्त्रों में वर्णित त्रिवेणी संगम के पुण्य और मोक्ष प्राप्ति की परंपरा के कारण लगता है,जो हजारों वर्षों से सनातन धर्म की आस्था और तप की धरोहर बना हुआ है।प्रयागराज माघ मेला संगम तट पर लगने वाला एक पवित्र आध्यात्मिक आयोजन है,जहाँ लाखों श्रद्धालु माघ मास में स्नान, दान और तप के लिए एकत्र होते हैं।

👉 2017 से 2025 तक, हमारी संस्था ने माघ मेले के माध्यम से हजारों ग्रामीण कारीगरों को अपनी प्रतिभा दिखाने और आत्मनिर्भर बनने का सशक्त मंच प्रदान किया है। इन आयोजनों में हस्तशिल्प मेलों जैसे आयोजनों ने न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है, बल्कि परंपरागत कला और संस्कृति को जीवित रखते हुए सामूहिक विकास का नया रास्ता भी खोला है।हमारे सतत प्रयासों ने ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन और कौशल संवर्धन की दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव लाया है।

हमारा प्रभाव(अब तक)

- 1200 + किसान पारंपरिक बीज प्रणालियों में प्रशिक्षित
- VSSY द्वारा 20000 + महिलाएं खाद्य-आधारित सूक्ष्म उद्यमों में.
- 20000 + महिलाओं में 80% महिलाए जिनमें 60% से अधिक, SC, ST, अल्पसंख्यक शामिल ।
- प्रयागराज से 35 + जनपदों में सफलतापूर्ण प्रशिक्षण सम्पन्न ।
- ODOP के माध्यम से प्रयागराज सहित उत्तर प्रदेश के अनेकों जनपदों के उत्पादों प्रदर्शन व ब्राडिंग।
- 150 + युवाओं के नेतृत्व में खाद्य और शिल्प स्टार्टअप शुरू किए गए ।

🔷 Our Main Initiatives & Engagement

🛠️ VSSY – Vishwakarma Shram Samman Yojana:The Uttar Pradesh government's a step toward our traditional artisans' and craftsmen's self-respect and independence.By encouraging rural employment and self-reliance, this program has allowed our organization to significantly contribute to the economic development of society.
⭐ ODOP - One District One Product: A special effort of the Uttar Pradesh government that aims to publicize a distinctive and traditional product from each district in both domestic and foreign markets. In a number of Uttar Pradesh districts, including Khalilabad (brass utensils), Deoria (decorative goods), and Prayagraj (Moonj handicrafts), we taught regional craftsmen and women's self-help groups and offered sustainable livelihood and marketing assistance. Prayagraj's unique product branding.

Magh Mela: The Priceless Heritage of India
India is a place where nature, tradition, and spirituality all come together. Here, fairs serve as a platform for faith, belief, and culture in addition to trade and entertainment. Another occasion that reflects India's centuries-old customs and spiritual way of life is the Magh Mela.
A spiritual and religious fair known as the "Magh Mela" is held annually between Paush Purnima and Magh Purnima (January–February). In Prayagraj (formerly Allahabad), where the Ganga, Yamuna, and unseen Saraswati rivers converge, it is particularly celebrated.
The history of gaining virtue and achieving salvation at the Triveni Sangam, which has been a legacy of the faith and penance of Sanatan Dharma for thousands of years, is the reason this fair is held. During the holy month of Magh, thousands of devotees congregate at the Magh Mela, which is held upon the banks of Sangam in Prayagraj, for penance, bathing, and giving.
👉 Our group has given thousands of rural craftsmen a strong stage to display their skills and gain independence through the Magh Mela between 2017 and 2025.
Not only have handicraft fairs improved their economic standing, but they have also preserved traditional art and culture, creating a new avenue for group growth.
Significant progress has been made in rural areas in terms of skill development and job creation as a result of our persistent efforts.

Our Impact (Till Now):

✓ 1200+ farmers trained in traditional seed systems
✓ 20,000+ women in food-based micro-enterprises through VSSY
✓ Among 20,000+ women, 80% are from SC, ST, minority communities
✓ Training successfully completed in 35+ districts from Prayagraj
✓ Product showcasing and branding of products from multiple districts of Uttar Pradesh including Prayagraj through ODOP
✓ 150+ food and craft startups launched under youth leadership

💬 शामिल हों

🖌️ कौशल विकास में जुड़े

🤝 हमारे साथ साझेदारी करें
🎓 स्वयंसेवक बनें या प्रशिक्षक बनें
💸 पोषण उद्यान या प्रशिक्षण केंद्र प्रायोजित करें
🍽️ हमारे साथ ग्रामीण खाद्य ब्रांड शुरू करें
🟥 गुरुकुलों को फिर से शुरू करने में सहायता करें और प्रायोजित करें

निर्देशक का संदेश

संस्थापक और निदेशक

"जड़ों से जुड़ो, भविष्य को गढ़ो"

आज के समय में सब सुविधा गति और एकरूपता की तरफ भाग रहे है हम समृद्धि को खो रहे हैं जो कभी हमारे समुदायों को स्वस्थ आत्मनिर्भर अर्थपूर्ण और संपूर्ण भारत को समृद्ध बनाती थी

आज सम्पूर्ण भारत एक चौराहे पर खड़ा है इसके युवा काम के लिए पलायन कर रहे हैं
अपनी परंपरा को भूल चुके हैं दिशाहीन हो चुके हैं भौतिक सुख को ही अपने जीवन का लक्ष्य समझ बैठे हैं
अपने कौशल को भूल कर आधुनिकता में खोकर हम भूल चुके हैं कि हमारे पूर्वजों द्वारा दिया गया ज्ञान शिक्षा परंपराएं न केवल तब अपितु अभी भी स्वर्णिम है । अपना स्वास्थ्य और अपना प्रकृति का विनाश हम स्वयं कर रहे हैं खेत अपना उपजाउपन खो रहे हैं इनका भोजन वैसा नहीं रहा जैसा पहले हुआ करता था लेकिन हमारा मनाना है कि आगे बढ़ने का एक और तरीका है एक ऐसा तरीका जो हमारे पूर्वजों के ज्ञान को पुनर्जीवित करता है हमारे लोगों को महत्वपूर्ण कौशल और शिक्षा से सशक्त बनता है और पारंपरिक ज्ञान को पारंपरिक शिक्षा पद्धति को वापस गरिमा प्रदान किया जाता है

इस पहल के माध्यम से हमारा लक्ष्य जीवन कौशल को तथा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुन: स्थापित करना है।
हमारी विरासत संस्कृति परम्परा में निहित ज्ञान अद्वितीय है एवं हर प्रकार से समृद्ध है
हमारी विरासत में निहित जीवन समृद्धि कौशल प्राकृतिक खेती हथकरघा बुनाई स्वदेशी खाद्य प्रणाली आयुर्वेद कारीगर शिल्प विज्ञान दर्शन युद्ध कलाएं आदि हैं यह केवल कौशल नहीं है यह संधारणीयजीवन और सामुदायिक गौरव का सार है।

आओ हम सब मिलकर अपनी पीढ़ी का, अपने संपूर्ण भारत का पुनर्निर्माण करें, अपनी जड़ों को पुनर्जीवन करें और स्वर्णिम भविष्य का निर्माण करें।

चलो विरासत से विस्तार करें, नई पीढ़ी का निर्माण करें /

💬 Join Us

🤝 Partner with us
🎓 Become a volunteer or trainer
💸 Sponsor a nutrition garden or training center
🍽️ Launch a rural food brand with us
🟥 Support and sponsor the revival of Gurukuls
🖌️ Engage in skill development

Message from the Director

Founder and Director

"Connect with Roots, Shape the Future"

We are losing the prosperity that once made our communities healthy, independent, and meaningful, as well as what made India genuinely whole and rich, at a time when convenience, speed, and uniformity are being sought after.
The whole country is at a turning point right now. Its youth have lost their traditions, lost their sense of purpose, are moving in quest of employment, and have started to view material luxuries as the ultimate objective of life.We've lost sight of our own abilities and become engrossed in modernity, forgetting that the wisdom, education, and customs passed down from our forefathers are not only applicable today but also timeless. Nature and our health are being destroyed by us.
Fertility is declining on our farms. The quality of our food has declined.
However, we think there is another path forward—one that brings back the knowledge of our forefathers, equips our people with essential skills and education, and restores the honor of our historical knowledge and Gurukul educational system.

Our goal with this project is to restore the Gurukul educational system and life skills.
Our past, culture, and traditions include a wealth of knowledge that is distinct and bountiful in all respects. Life skills, natural farming, handloom weaving, indigenous food systems, Ayurveda, artisan crafts, philosophy, the sciences, warfare arts, and more are all abundant in our heritage.

Together, let's rebuild our generation, our entire country, our heritage, and create a bright future.

Let's create a new generation and carry on the tradition.

विश्वकर्मा श्रम सम्मान

हस्तशिल्प सप
2024

trepreneurship
Skills Council

विश्वकर्मा श्रम सम्मान

Contact Us

📍 Address:

Kaserua Kalan , Azad Nagar
, Sahson, Prayagraj – 221507
48/5, H.I.G., Jhunsi, Prayagraj – 211019
12A04, Awadh Vihar Yojna, Sector 8,
Lucknow – 226001

🌐 Website: spss.ind.in

✉️ Email: ruralgro@gmail.com
spssup353@gmail.com

📱 Phone: +91 9452825789

🔗 Social Media:1.twitter: @ruralgro
2. insta id :_ruralgro__official_

SARDAR PATEL SHIKSHAN SANSTHAN
अन्धकारात् प्रकाशाय, संस्कारैः समृद्धये।